सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

वास्तुशास्त्र डिप्लोमा कोर्स प्रथम सत्र (प्रथम पत्र) **कोर्स - 1**

पाठ्यविषय - सामान्य ज्योतिष एवं भूमिचयन

1. वास्तुशास्त्र के प्रवर्तक आचार्य
2. वेदाङ्गों में वास्तुशास्त्र का स्थान
3. राशि एवं राशियों के स्वामी, ऊँच नीच आदि
4. नक्षत्रों से राशि का ज्ञान
5. राशियों के स्वरूप एवं दिशा विभाग
6. ग्रहों का मित्र-शत्रु, क्रूर-अक्रूर का ज्ञान
7. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
8. भद्रा विचार, भद्रा का वास एवं फल
9. काल पुरुष के अंग में राशि विभाग
10. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
11. नक्षत्रों के अनुसार दशा साधन
12. नक्षत्रों के अनुसार दशा साधन
13. नक्षत्रों के अनुसार दशा साधन
14. नक्षत्रों के अनुसार दशा साधन
15. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
16. मेलापक विचार
17 मेलापक विचार
18. मेलापक विचार
19. मेलापक विचार
20. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
21. वास्तु पुरुष का स्वरूप
22. वास्तु पुरुष की उत्पत्ति का वर्णन
23. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
24. गृह निर्माण का हेतु
25. गृह निर्माण से पुण्य
26. जीर्णोद्धार का फल
27. दूसरे के गृह में वास करने का फल
28. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
29. भूमि का चयन
30. भूमि का चयन
31. ग्राम वास योग्य है अथवा नहीं
32. ग्राम वास में शुभाशुभ नराकार चक्र विचार
33. ग्राम वास में वर्ग विचार
34. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
35. काकिणी विचार
36. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
37. भूमि परिक्षण
38. भूमि के गंध
39. भूमि के वर्णादि का ज्ञान
40. भूमि का पृष्ठ विचार
41. भूमि का पृष्ठ विचार
42. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
43. शल्योद्धार के नियम
44. शल्योद्धार के नियम
45. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

वास्तुशास्त्र डिप्लोमा कोर्स प्रथम सत्र (द्वितीय पत्र) **कोर्स -2**

पाठ्यविषय - भू-शोधन-गृहपिण्ड एवं चतुःषष्ठिचक्र

1. वास योग्य भूमि के लक्षण
2. सुप्तादि भूमि का ज्ञान
3. जीवितादि भूमि का ज्ञान एवं फल
4. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
5. भूमि संशोधन के लिए खात का स्थान
6. भूमि संशोधन के लिए खात का स्थान
7. भूमि संशोधन प्रकार
8. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
9. दिग् साधन का महत्त्व
10. दिग् साधन विधि
11. दिग् साधन विधि
12. भूमि का क्षेत्रफल ज्ञान करना
13. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
14. पिण्ड साधन विधि
15. पिण्ड साधन विधि
16. आय साधन
17 आय साधन
18. आय के अनुसार निवास एवं गृह निमार्ण
19. पिण्ड के अनुसार आयादि का ज्ञान
20. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
21. नाम राशि एवं जन्म राशि की प्रधानता
21. वास्तु के नक्षत्र के अनुसार राशि ज्ञान
22. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
23. चतुःषष्ठि वास्तु चक्र निर्माण प्रकार
24. चतुःषष्ठि वास्तु चक्र के देवता क्रम
25. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
26. मेलापक विचार
27. मेलापक में नाड़ी एकता की प्रधानता
28. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
29. वास्तु में दिक् पालों के स्थान
30. वास्तु में ब्रह्म स्थान
31. वास्तु में ब्रह्म स्थान की प्रधानता
32. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
33. वास्तु में जल का स्थान
34. वास्तु में रसोई घर की प्रधानता
35. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
36. गृह का आयु ज्ञान
37. गृह निमार्ण ग्रह बल विचार
38. गृह निमार्ण में लग्न एवं ग्रह का विचार
39. गृहारम्भ में ग्रहों के स्थिति अनुसार आयु ज्ञान
40. गृह निर्माण में नक्षत्र की प्रधानता
41. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
42. वास्तु चक्र की प्रधानता
43. वास्तु में गृह की स्थिति

44-45. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
वास्तुशास्त्र डिप्लोमा कोर्स प्रथम सत्र (तृतीय पत्र) **कोर्स -3**
पाठ्यविषय - द्वारनिर्णय एवं नगर वास्तु

1. वास्तु भूमि के प्रकार एवं फल
2. आँगन विचार, आँगन की लम्बाई, चौड़ाई एवं फल
3. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
4. राशि के अनुसार द्वार निर्णय
5. वर्ण के अनुसार द्वार निर्णय
6. भित्ति के अनुसार द्वार निर्णय
7. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
8. द्वार वेध विचार
9. द्वार का फल
10. द्वार का स्थान निर्णय
11. चारो दिशाओं में द्वार का फल
12. द्वार चक्र के अनुसार द्वार का फल
13. द्वार स्थापन मुहूर्त्त
14. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
15. मण्डलेश साधन
16. मण्डलेश का फल
17. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
18 वास्तु क्षेत्र का विस्तार निर्णय
19. सिंह द्वार निर्माण निर्णय
20. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
21. ईशानादि कोणों पर द्वार का फल
22. ईशानादि कोणों पर चरक्यादि का निवास एवं फल
23. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
24. वर्णो के अनुसार गृह का दिर्घ-विस्तार निर्णय
25. पाँच प्रकार के गृह निर्माण विचार
26. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
27. दुर्ग निर्माण का फल
28. दुर्ग के भेद एवं नाम तथा फल
29. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
30. दुर्ग की ऊँचाई का प्रमाण
31. नगर का आकार
32. नगर रचना का क्रम
33. नगर के भेद
34. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
35. नगर के मध्य राजमार्ग का निर्माण
36. नगर से देवालय का मुख विचार
37. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
38. ग्राम में वर्णादि क्रम से वास विचार
39. नगर में सिंह द्वार विचार
40. नगर के उत्तमादि भेद
41. गृह निर्माण काल के अनुसार राजयोग
42. विशिष्टयोग मे निर्मित गृह से उत्पन्न बालक का राजयोग
43. विशिष्टयोग में निर्मित गृह से अग्नि दाहादि का भय
44. विशिष्टयोग में गृह निर्माण से यक्ष भूत प्रेतादि का भय
45. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
वास्तुशास्त्र डिप्लोमा कोर्स प्रथम सत्र (चतुर्थ पत्र) **कोर्स -4**
पाठ्यविषय - गृहकाष्ठ एवं गृहारम्भ विचार

1. भित्तिमान ज्ञान
2. गृह से पूर्वादि दिशाओं में उच्च-नीच के फल
3. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
4. पूर्वादि दिशाओं में गृह निर्माण
5. सूतिका गृह निमार्ण विचार
6. प्रासाद और हर्म्य का लक्षण
7. उत्तमादि भेद से ईष्टों की बाह्य मित्ति का प्रमाण
8. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
9. ईष्टिका विचार
10. वर्णादि क्रम से इष्टिका प्रमाण
11. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
12. स्तम्भ रोपण विधि
13. शंकु लक्षण
14. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
15. तृण काष्ट गृह विचार
16. गृह में काष्ठ निर्णय
17. गृह निर्माण में ग्राह्य काष्ठ
18 गृह निर्माण में निषिद्ध काष्ठ
19. गृहारम्भ व्यवस्था
20. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
21. पुष्प वाटिका निर्माण प्रकार
22. वाटिका में वृक्षों का क्रम
23. गृह समीप में त्याज्य वृक्ष
24. गृह के चारों दिशाओं में वाटिका निर्णय
25. लता-वृक्ष-पौधा रोपण मुहूर्त्त
26. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
27. दकार्गल विचार
28. जलाशयादि मुहूर्त्त
29. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
30. देवस्थापन मुहूर्त्त
31. उग्र देवताओं का स्थापन मुहूर्त्त
32. गृहारंभ में वास्तु चक्र
33. गृहारंभ में कूर्म चक्र
34. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
35. चतुःषष्ठी पद वास्तु में देव स्थापन क्रम
36. एकशीति पद वास्तु में देव स्थापन क्रम
37. शतपद वास्तु में देव न्यास क्रम
38. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
39. भूमि परीक्षण के वास्तु भूमि में किये जाने वाले कर्म
40. वास्तु देवता के लिए दिये जाने वाले पूजा की वस्तु
41. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
42. वास्तु पूजन का माहात्म्य
43. वास्तु पूजन नही करने से दोष
44. प्रायोगिक एवं विशेष व्याख्यान
45. सेमिनार

द्वितीय-सत्र

प्रथम-पत्र

1. जीवितादि भूमि ज्ञान प्रकार।
2. सुप्तादि भूमि ज्ञान।
3. भूमि संशोधन का खात कहाँ करें।
4. शिलाओं के प्रकार एवं प्रमाण।
5. राहु का पुच्छ, मुख विचार।
6. शिलान्यास का स्थान।
7. स्तम्भ विचार।
8. शिलान्यास एवं भूमि पूजन।
9. शिलान्यास योग्य शुभ मुहूर्त।
10. शिलान्यास स्थल में स्थापनीय द्रव्यों का विचार।
11. वर्णादि क्रम से शंकु विचार।
12. देवालयादि के लिए स्थान निर्णय।
13. गृहारम्भ में लग्न एवं पंचाग शुद्धि।
14. कूप चक्र के अनुसार जल यंत्र (बोरिंग, नल) स्थापन मुहूर्त।
15. गृहारम्भ में सप्तसकार की विशेषता।
16. गृहारम्भ में पूजनीय देवता एवं पूजा प्रकार।
17. गृहारम्भ काल में ग्रहों की स्थिति एवं फल विचार।
18. शिलान्यास स्थल पर खात में मिलने वाले पदार्थों का शुभाशुभत्व।
19. सौरमास एवं चान्द्रमास के अनुसार वास्तु पुरुष का मुख विचार।
20. शीर्षादि स्थानवश खात का फल।
21. गृहारम्भ में चान्द्रमास का शुभाशुभत्व।
22. गृहारम्भ में वृष वास्तु चक्र की शुद्धि।
23. गृहादि में सूर्य बेध, चन्द्र बेध विचार।
24. गृहारम्भ में कूर्म चक्र विचार।
25. कूप चक्र विचार।
26. भौम नक्षत्र से कूप चक्र एवं राहु नक्षत्र से कूप चक्र विचार।
27. वापी कूपादि आरम्भ मुहूर्त।
28. शिला स्नपन सामग्री।
29. शिला स्नपन क्रम।
30. शिला शान्त्यर्थ बलिदान विधि।
31. शिलाओं के देवता।
32. खात में रखने वाले कलशों का नाम एवं क्रम तथा व्यवस्था।
33. वर्णादि, ब्राह्मणादि क्रम से शिला का प्रमाण।
34. चरणी विचार।
35. चरणी का परिमाण।

द्वितीय सत्र

द्वितीय पत्र

1. गृह प्रवेश का प्रकार
2. गृह प्रवेश में अयन, मास आदि का विचार
3. नवीन गृह एवं जीर्ण गृह का विचार
4. नवीन गृह प्रवेश का मुहूर्त्त
5. जीर्णादि गृह प्रवेश का मुहूर्त्त
6. गृह प्रवेश काल में शुक्र विचार
7. वाम रवि का विचार
8. वाम रवि विचार में मतान्तर
9. गृह प्रवेश में कुम्भ चक्र शुद्धि
10. कपाट विचार
11. गृह प्रवेश काल में कर्त्तव्याकर्त्तव्य विचार
12. यात्रा निवृति से गृह प्रवेश मुहूर्त्त
13. वास्तु शांति प्रकार
14. वास्तु शांति प्रकार
15. वास्तु रोपण विधि
16. वास्तुशांति में वास्तु मंडल का विचार
17. वास्तु वलि विधान
18. वास्तु शांति में शंकु रोपण विधि
19. वास्तु शांति में दिग्पालों की स्थापना एवं ध्वजाविचार
20. गृह प्रवेश विधि
21. गृह प्रवेश काल में गृहोपकरणोका पूजन
22. गृह प्रवेश काल में लग्न शुद्धि
23. गृह प्रवेश काल में मंगल कलशादि की शुभता
24. गृह प्रवेश में अन्य धार्मिक अनुष्ठान जपादि का निर्णय
25. जन्म राशि जन्म लग्न से प्रवेश लग्न का विचार

द्वितीय सत्र

तृतीय पत्र

1. वास्तु शास्त्र में दिशा का महत्व
2. वास्तु शास्त्र में पूर्व दिशा का महत्व
3. वास्तु में पूर्व का दोष होने से अशान्ति एवं शान्ति के उपाय
4. वास्तु में अग्नि दिशा दूषित होने पर अशान्ति एवं शान्ति के उपाय
5. वास्तु में दक्षिण दिशा के दोष एवं शान्ति के उपाय
6. वास्तु नैर्ऋत्य दूषित एवं शान्ति के उपाय
7. वास्तु में पश्चिम दूषित एवं शांति के उपाय
8. वास्तु में वायव्य दूषित एवं शान्ति के उपाय
9. वास्तु में उत्तर दूषित एवं शान्ति के उपाय
10. वास्तु में ईशान दूषित एवं शान्ति के उपाय
11. वास्तु सूर्य वेध से दूषित एवं शांति के उपाय
12. वास्तु में सीढ़ी के दोष एवं उपाय
13. वास्तु में शौचालय के दोष से अशान्ति एवं उपाय
14. वास्तु में रसोईघर का दोष से अशान्ति एवं उपाय
15. आदर्श भवन का स्वरूप
16. आदर्श वास्तु का स्वरूप
17. आदर्श वास्तु का स्वरूप
18. आदर्श वास्तु का स्वरूप
19. आदर्श वास्तु का स्वरूप
20. वास्तु में सन्तान दोष एवं शान्ति के उपाय
21. वास्तु लक्ष्मी की अस्थिरता एवं शांति के उपाय
22. वास्तु में गृह जन्म दोष एवं शांति के उपाय
23. पिण्ड का ह्रास एवं वृद्धि होने से अशांति
24. पिण्ड का ह्रास एवं वृद्धि होने से अशांति एवं शांति के उपाय
25. वास्तु में अन्य दोषों की शांति के उपाय

द्वितीय सत्र

चतुर्थ पत्र

1. व्यवसायिक वास्तु
2. व्यावसायिक स्थान
3. कारखाने
4. विद्यालय
5. पुस्तकालय
6. अस्पताल
7. अस्पताल में चिकित्सक एवं मरीजों का स्थान
8. अस्पताल में कर्मचारियों एवं उपकर्मचारियों का स्थान
9. क्लबों की व्यवस्था
10. उपासना स्थलों की व्यवस्था
11. शहरी उद्योगों की वास्तु व्यवस्था
12. नगरीय उद्योगों की वास्तु व्यवस्था
13. औद्योगिक संस्थानों में प्रशासनिक कार्यालय
14. औद्योगिक प्रतिष्ठानों में कच्चामाल हेतु भण्डारगृह
15. आधुनिक वास्तु के अनुसार कॉम्पलेक्स का निर्माण
16. आधुनिक वास्तु के अनुसार कॉम्पलेक्स का निर्माण
17. आधुनिक वास्तु के अनुसार कॉम्पलेक्स का निर्माण
18. समतल भूमि पर वास्तु निर्माण विधि
19. नदी के किनारे वास्तु निर्माण विधि
20. पहाड़ी पर्वतीय क्षेत्र में वास्तु निर्माण विधि
21. वास्तु में पृथ्वी तत्व की प्रधानता वास्तु के अनुसार
22. वास्तु में जल तत्व की प्रधानता वास्तु के अनुसार
23. वास्तु में अग्नि तत्व की प्रधानता वास्तु के अनुसार
24. वास्तु में वायु तत्व एवं आकाश तत्व की प्रधानता वास्तु के अनुसार
25. आधुनिक वास्तु शास्त्र का प्रयोग एवं अवधारणा — 10